कहानी

सत्रहवां श्रृंगार

रेखा शाह आरबी

सिंपल शालीन व्यक्तित्व की नीलम स्कूल में टीचर थी .उसका व्यक्तित्व उसकी गरिमा के अनुसार ही था जो उसे पसंद भी था.

आज उसकी तबीयत ठीक नहीं थी . सुबह से ही उसे हल्का-हल्का बुखार महसूस हो रहा था . तो उसने आज स्कूल से छुट्टी ले ली थी.

वह अपने स्कूल नहीं गई थी . वह स्कूल में मैथ की टीचर थी बच्चों को मैथ पढ़ाती थी. घर के रोजमर्रा के काम साफ सफाई उसकी हाउस हेल्पर निपटा कर चली गई थी. तो वह भी दवा लेकर आराम कर रही थी.

अभी वह घर पर अकेली ही थी . क्योंकि पति उमेश जी भी शिक्षक थे .वह स्कूल गए थे और बेटा शुभांशु कॉलेज गया था .और बेटी प्रिया भी कॉलेज गई थी .

तभी किसी ने बेल बजाया तो वह उठकर गेट पर देखने आई कि कौन है . ग्रिल से बाहर झांक कर देखा तो गेट पर डिलीवरी बॉय खड़ा था. घर में शायद किसी ने ऑनलाइन समान मंगाया था . वही डिलीवर करने आया था .

गेट खोल कर उससे सामान लिया सारा सामान बेटी प्रिया ने मंगाया था. और पेमेंट कर चुकी थी तो नीलम को बस सामान रिसीव करना था. जो उसने कर लिया.

नीलम को काफी हैरत हुई काफी ढेर सारे सामान के पैकेट प्रिया ने मंगाये थे.

उसने सारा सामान ले जाकर प्रिया के रूम में रख दिया .और वापस आकर आराम करने लगी क्योंकि उसे अभी भी हल्का-हल्का बुखार था.

तीन बजे के करीब कॉलेज से प्रिया आई और आते ही पूछा -मम्मी मेरा ऑनलाइन कुछ सामान बुक था ..क्या वह आ गया है ..आज ही आने वाला था उसका पेमेंट मैं कर चुकी थी. हां तुम्हारा सारा सामान आ चुका है तुम्हारे रूम में रख दिया है जाओ देख लो !

उत्सुकता में प्रिया जल्दी-जल्दी अपने रूम में जाने लगी तो नीलम ने पीछे से टोंका- अरे बाहर से आई हो ..पहले हाथ मुंह धो लो.. उसके बाद खा पी लो.. सामान तो बाद में भी देख सकती हो.. कहीं सामान भाग के जा थोड़ी ना रहा है .. !

नहीं मम्मी.. मुझे अभी देखना है.. कि मैंने जो आर्डर किया था वही सारे सामान है या नहीं ! प्रिया अपने ही धुन में बोलती हुई अपने रूम में चली गई.

नीलम बेटी की एक्साइटमेंट सामान के प्रति देखकर सोच में पड़ गई कि आखिर उसने ऐसा क्या मंगाया है . जिसके लिए उसके अंदर इतनी उत्सुकता भरी हुई है.

नीलम ने समान खोलकर देखा नहीं था. वैसे ही पैकिंग उसके कमरे में रख दिया था. अत: उत्सुकता वश वह भी प्रिया के पीछे-पीछे कमरे में आ गई. तो देखा कि प्रिया सामानों को अनपैकिंग कर रही थी .

उसमें सभी कॉस्मेटिक और मेकअप से जुड़े हुए ज्यादातर सामान थे. कहीं ना कहीं नीलम को इतना सारा कॉस्मेटिक सामान और वह भी कॉलेज जाने वाली लड़की के लिए उपयुक्त नहीं लग रहा था .

और अभी प्रिया की उम्र भी कुछ खास नहीं थी मात्र 15 साल ही उसकी उम्र थी .इसीलिए उसे यह सारे सामान कुछ ज्यादा ही लग रहे थे. एक मां के रूप में नीलम की चिंता जायज थी. साधारण मेकअप कोई बात नहीं ..लेकिन बहुत सारा मेकअप का सामान इतनी कम उम्र में यूज करना उसे सही नहीं लग रहा था.

तो उसने प्रिया से कहा- यह सारा कुछ तुमने अपने लिए मंगाया है ?.. !

तो प्रिया बोली - हां मम्मी फेस्टिवल आने वाले हैं ..उनमें मैं खूब अच्छे से तैयार होउंगी ..उसके लिए यह सारे सामान तो चाहिए ही !

नीलम बेहद शांत स्वर में बोली-वह तो ठीक है पर.. तुम कब से इतना मेकअप का सामान यूज करने लगी ?..तुम तो इतना ज्यादा मेकअप का सामान कभी इस्तेमाल नहीं करती हो ...वैसे भी इंसान जितना नेचुरल रूप से सुंदर लगता है.. उतना बनावटी मेकअप के साथ बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता है ! 11वीं क्लास पढ़ने वाली उसकी टीनएज बेटी थोड़ा मायूस होकर बोली -क्या मम्मी सारी लड़कियां तो करती हैं.. क्या वह अच्छी नहीं लगती ?!

बेटा अच्छा या बुरा लगने की बात नहीं है.. श्रृंगार और संजने- सवरने के लिए तो पूरी उम्र पड़ी हुई है.. स्त्री के सोलह श्रृंगार होते हैं.. लेकिन आज के जमाने में स्त्री के सौलह नहीं ..सत्रह श्रृंगार होते हैं... और सत्रहवां है.. उसका शिक्षित होना और जो लड़की इस श्रृंगार का आभूषण धारण कर लेती है ..वह कोई और मेकअप करें या ना करें... फिर भी सुंदर ही लगती है ..और तुम्हारी उम्र है इस शिक्षा के आभूषण को पहनने की है..यह सब आभूषण तो बनावटी और दिखावटी है ..तुम्हारा सच्चा श्रृंगार तो तुम्हारी शिक्षा है.. तुम कहां इन बनावटी श्रृंगार के चक्कर में पड़ रही हो.. मेरा डर बस इसी बात को लेकर है कि.. कहीं तुम इन बनावटी श्रृंगार के चक्कर में तुम्हारा असली श्रृंगार फीका ना पड़ जाए ..क्योंकि जीवन के मुश्किल वक्त में यही श्रृंगार उसका संबल बनकर साथ देते हैं..साहस बनता है और उसके साथ जीवन भर बना रहता है ..बाकी सब समय के साथ फीके पड़ते चले जाते हैं ..और तुम्हारा समय इस सत्रहवें श्रृंगार को धारण करने के लिए ढेर सारी मेहनत करने का है.. ना की इन फालतू के कामों में अपना समय बर्बाद करने का है !

अपनी मम्मी की बातें सुनकर सामानों की अनपेकिंग करते प्रिया के हाथ रुक गए. समझदार प्रिया अपनी मम्मी की बातों का मंतव्य समझ गई.

और सामानों को परे हटाते हुए अपनी मम्मी के गले लग गई और बोली- मम्मी.. मैं आपकी बातें समझ गई.. आपने बिल्कुल सही कहा.. मैं भी कहां अपनी फ्रेंड्स की देखा -देखी ..इतने मेकअप के चक्कर में पड़ गई.. लेकिन आप देख लेना.. आपकी बेटी का सत्रहवां श्रृंगार गर कभी भी फीका नहीं पड़ेगा .. मैं आपसे प्रॉमिस करती हूं

प्रिया अपने मम्मी के हाथों को अपने हाथों में लेते हुए बोली.नीलम मुस्कुरा उठी उसको संतोष था कि बेटी ने उसकी बातों का सही अर्थ समझ गई और भविष्य के प्रति सचेत भी हो गई.

क्लास by बड़े भाई

चुनौतियों की कराएं विचारों से टक्कर

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

हाल ही में मेरा एक विद्यालय में जाना हुआ . विद्यालय की मुखिया से मुलाकात हुई . अब चूँकि वो बच्चों से जुडी रहती हैं तो सहज ही चर्चा में यह प्रश्न बन ही जाता है कि कुछ बच्चों से जुड़ी बात हो ही जाती है यदि हमारे घर में भी कोई बच्चा है . मैंने पूछा - मेरा बेटा अभी तीन साल का है, कई बार उसकी हरकतें बड़ा गुस्सा दिला देती हैं . कभी थोड़ा तेज़ बोल देता हूँ, डांट देता हूँ . यह जानते हुए भी कि वो अभी नासमझ है फिर भी. बाद में पछतावा भी होता है . इस पर उनका जवाब बेहद शानदार था . मैं उस जवाब को कभी नही भूल सका .

उन्होंने हँसते हुए कहा कि संदीप जी एक विचार आपके साथ साझा करती हूँ जो मुझसे भी कभी इसी पर किसी विद्वान् ने किया था . उन्होंने कहा कि बच्चे को आप इस तरह देखना शुरू करिए कि वह शरीर रूप में हो सकता है कि आपसे छोटा हो लेकिन आत्मा रूप में क्या पता आपसे सालों बड़ा हो . और इस नजरिये से जब आप पूरे विश्वास के साथ देखना शुरू करेंगे तो आप बहुत कुछ नियंत्रित कर लेंगे . उसकी शैतानियों से आए आपके गुस्से को निश्चित रूप से नियंत्रित कर आप उसके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे और प्यार से धीरे धीरे अप उसे संभाल लेंगे . इससे बच्चे पर भी बड़ा असर पड़ेगा और फिर वो आपकी सुनने भी लगेगा .

उनकी यह बात उनके कहते हुए ही मेरा मनोभाव बदल रही थी .

कितना जादुई है न कि कोई एक विचार किस तरह हमारे पूरे मन का संसार बदल देता है . कहना यह चाहता हूँ कि यदि जीवन किसी कठिनाई से गुज़र रहा हो तो कोई विचार उसके सामने खड़ा कर दिया जाये तो वो मुश्किल बड़े आराम से पार हो जाती है . जैसे कि मैं हमेशा मुश्किलों के लिए यह विचार रखता हूँ कि हर समय बीत ही जाता है . जीवन है तो मुश्किल है,जीतना हारना लगा ही रहता है और लगा ही रहेगा, क्या अधिक सोचना . छोटे भाई,यह विचार पता नही लेकिन सच कह रहा हूँ बड़ी हिम्मत देता है, धैर्य बंधाता है और सच में सब संभल जाता है .

आप भी ऐसे ही बड़ी-बड़ी चुनौतियों को बढ़िया से विचार का टक्कर दिलवाएं . आप फ़र्क देखेंगे और मुझे मज़बूती से सामना करते मिलेंगे . हहह..

बस यही कहना था, धन्यवाद .

आयोजन

सृजन के सम्मान में सजी अनूठी शाम

श्रेष्ठ कृतियों के लिए पुरस्कृत हुए रचनाकार

मुकेश तिवारी

राजधानी भोपाल में सृजन के सम्मान में खूबसूरत शाम सजी, जिसमें रचनाकारों को उनकी श्रेष्ठ कृति के लिए अखिल भारतीय और प्रादेशिक पुरस्कार से अलंकृत करने के लिए साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश ने रवींद्र भवन भोपाल के सभागृह में देश और प्रदेश के अनेक हिस्सों से पधारे रचनाकारों ने वर्ष 2022 और 2023 के सम्मान और पुरस्कार संस्कृति विभाग के संचालक एन.पी. नामदेव, ख्यात कामेंटेटर पद्मश्री सुशील दोशी और साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश के निदेशक डॉ. विकास दवे के हाथों ग्रहण किये.

इस अवसर पर पद्मश्री सुशील दोशी ने कहा कि जब राजनेताओं के नाम पर सड़कों का नामकरण होता है तो साहित्यकारों के नाम पर भी होना चाहिए. मैं साहित्य अकादमी के मंच से मध्यप्रदेश सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं. श्री दोशी की बात के समर्थन में पूरा सभागृह तालियों से गूँज उठा.

डॉ. विकास दवे ने अकादमी की गतिविधियों पर प्रकाश डाला. डॉ. दवे ने यह घोषणा की कि हिंदी दिवस पर 14 सितंबर को युवा रचनाधर्मी कुंभ आयोजित किया जाएगा. संचालन विनय उपाध्याय ने किया. इस अवसर माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्व विद्यालय, भोपाल के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी, साहित्य जगत के अनेक प्रमुख लोग और बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी उपस्थित थे. अखिल भारतीय पुरस्कार में एक लाख रुपये एवं प्रादेशिक पुरस्कार में 51 हजार रुपये की राशि के साथ शॉल, श्रीफल, स्मृति चिह्न और प्रशस्ति पत्र रचनाकारों को प्रदान किया गया.

वर्ष 2022 और 2023 के लिए मध्यप्रदेश की बोलियों मालवी, निमाड़ी, बघेली, बुंदेली, भीली और गोंडी के साहित्यिक कृति पुरस्कार भी प्रदान किए गये.

वर्ष 2022 में 'मालवी' के लिए संत पीपा स्मृति पुरस्कार रजनीश दवे-इंदौर की कृति 'आस की ओसारी', 'निमाड़ी' के लिए संत सिंगा जी स्मृति पुरस्कार विजय कुमार जोशी-महेश्वर की कृति 'आस तीस का लाडू', 'बघेली' के लिए विश्वनाथ सिंह जूदेव स्मृति पुरस्कार शसीताशरण गुप्त-मैहर की कृति 'जगन्नाथ केर परसाद', 'बुंदेली' के लिए छत्रसाल स्मृति पुरस्कार मनीराम शर्मा-दतिया की कृति 'हम हैं इन गाँवन के ठौर के' को दिया गया है.

वर्ष 2023 में 'निमाड़ी' के लिए संत सिंगा जी स्मृति पुरस्कार राकेश गीते -खरगोन की कृति 'गुड़ की गाँगड़ी', 'बघेली' के लिए विश्वनाथ सिंह जूदेव स्मृति पुरस्कार चन्द्रिका प्रसाद 'चन्द्र'-रीवा की कृति 'रिस्तन केर निबाह', 'बुंदेली' के लिए छत्रसाल स्मृति पुरस्कार मनोज कुमार तिवारी-बड़ामलहरा की कृति 'बोल बुन्देली' को दिया गया है.

व्यंग्य रचना

वादे हैं, वादों का क्या

सूर्यदीप कुशवाहा

भाई अच्छे नेता होते हैं. जो कई किस्म के वादों से मालामाल होते हैं. जिनके पास वादे नहीं हैं वह अच्छे नेता नहीं है. चुनाव में क़सीदे पढ़े जाते हैं. चुनाव में केवल वादे होते हैं जो निभाए पांच साल नहीं जाते हैं. बस जनता को मृगमारिचिका दिखाया जाता है. वह इसी भ्रम में पांच साल खोया रहता है.

जमीनी नेता अक्सर पांच परसेंट बात निभा ले जाता है. लोकतंत्र में जनता की आस्था बनी रहे इसलिए लुभावना स्वप्न दिखाया जाता है.चुनाव से पहले वादे की कई वरायटी जनता में बाटे जाते हैं. चुनाव बाद बड़े भाग्य से वादे पूरे होते हैं. कुछ वाहियात वादे होते हैं जिनसे वे जनता को भरमाते हैं. कुछ वादे दो कौड़ी-सा होते हैं. जनता को वह वादे वोट की कीमत में बेच दिए जाते हैं.दाम ज़रूरी नहीं किफायती हो.रियायत बस नेताजी को जनता देती है.

समझदार जनता आसानी से वादों के चक्कर में नहीं आती. चुनावी वादे कभी पूरे नहीं होते क्योंकि पूरे हो जाएंगे तो पांच साल बाद नेताजी क्या वादा करेंगे ?अगर नेताजी के विरुद्ध लोग उठ खड़े होते हैं तो नेता पलटी की गुलाटी क्या खूब मारते हैं. भरम में जनता पड़ जाती है और नरम हो जाती है.लेकिन नए वादा के चारा में फंस जाती है. नेता जी के झूठे दावों और भ्रामक पोस्टरों से जनता विवेकहीन रह जाती है. लेकिन अभी तक नेताजी के झूठे वादों के खिलाफ कोई जंग नहीं लड़ा जा सका है. सो हमारे नेताजी धड़ल्ले से कई किलो जनता के दिमाग में वादा भरते रहते हैं.भोली जनता को बरगलाते रहते हैं और चुनावी दंगल बड़ी जीत हासिल हो जाती है.

चुनावी मौसम में वादों की गड़गड़ाहट की जुमलेबाजी की पैरवी नेता करते रहते हैं. यह भाषण में स्वप्न सुंदरी क्या खूब दिखती है. कोई पार्टी विकास का वादा करता है लेकिन कोई बेरोजगारों को रोजगार देने की बात नहीं करता है. बेरोजगार रहेंगे तो तभी नेताजी के आगे - पीछे करेंगे. रोजगार पाकर वह परिवार में मस्त रहेगा. नेताजी का काम खाक करेगा. वे इतना ही सोचते हैं कि बेरोजगार बेचारा मेरे साथ विकास करेगा. परिवार चलाने के पैसे लाकर वह क्या करेगा ? लेकिन वादा करने में नेताजी का भला कुछ जाता है. इसीलिए मुँह उठाया और एक बड़ा सफेद हाथी का वादा कर दिया. जनता सफेद हाथी पांच साल ढूढ़ती रहती है. भुगतने वाले भुगतें ! नेता जी तो चुनाव जीतकर संसद की ओर चलते.चुनाव में मतदाताओं को शुद्ध-ब्रांडी बाटेंगे, भले ही आप पीते न हों. भाई न पीने वालों का घाटा और नहीं देंगे बेचारे को दो जून का आटा.

ऐसा नहीं है कि उनके सभी वादे झूठे ही होते हैं. कुछ वादे बेशक बेमन से निभाए भी जाते है. लेकिन न भी निभाए जाएं तो कोई मलाल नहीं जनता को. नेताओं के भाषण से जनता लाल है, यही बात लोकतंत्र में कमाल है. जनता को भरमाने के लिए नेताजी का वादा करना मामूली बात है. इन वादों से मंच सजे रहते हैं. वादा में फायदा ज्यादा है. वादों का यह सिलसिला चुनावी मौसम में खूब बरसता है. बाढ़ की नौबत आ जाती है. जनता बचने के लिए ईवीएम वोट में बैठ जाती है.वादा करने में आखिर जाता ही क्या है ? नेताजी ने माइक पकड़ा और झट से कर डाला विकास का वादा, जनता को क्या चाहिए इससे ज्यादा. जनता को भला कहां याद है.... वादा है, वादों का क्या....

लघुकथा

गणेश विसर्जन

अशोक वाधवाणी

आत्माराम ने हर वर्ष की तरह परंपरागत तरीके से घर पर श्री गणेश चतुर्थी पर गणेश जी की मूर्ति स्थापित की. आरती के समय उनका पोता आलोक, गणपति बप्पा मोरिया ! का जयकारा पूरे जोश से लगाता था. आज वो बड़ा मायूस है कि श्री गणेश का विसर्जन होगा. आत्माराम को स्मरण हो आया कि पिछले वर्ष श्री गणेश की प्रतिमा विसर्जित करने के बाद, कुछ दिनों तक आलोक व्याकुलता से एक ही रट लगाता था, गणेश जी कहां गए ? जब उसे बताया जाता था कि वे तो अपने घर गए हैं, तो उत्सुकता से फिर सवाल करता, वे वापस कब आएंगे ? यही सब सोचकर उन्होंने एक ठोस निर्णय लिया मन ही मन में.

आत्माराम परिवार के साथ आलोक को भी साथ ले गए श्री गणेश विसर्जन के समय. नदी किनारे एक कृत्रिम कुंड की व्यवस्था की गई थी , ताकि श्रद्धालुगण मूर्ति को नदी में बहाने के बजाय इसी में डुबोकर, फिर उसे किसी को दान कर दें. आत्माराम ने मूर्ति को कुंड में स्नान करवाने के बाद उसे आलोक को थमाते हुए कहा, हम गणपति को अपने घर ले चलेंगे. वहां हमेशा के लिए रखेंगे. सुबह-शाम आरती भी करेंगे. यह सुनते ही आलोक खुशी से उछल पड़ा. जोरों से चिल्लाया, गणपति बप्पा मोरिया !

कविताएं

अनुराधा ओस

तुम्हारे इंतज़ार में

(1)

तुमने कहा मैं यात्रा में हूँ
मैंने कहा मैं भी !

यात्राएँ अक्सर हमें वहाँ ले जाती हैं
जहां हम चाह कर भी नही जा पाते

थक चुकी यात्राएं भी
यात्रा में होती हैं
गतिहीन होते पाँव
मन की यात्रा में बदल जाते हैं
सुनो !तुम्हारे शहर से कोई रेल नही आती
मेरे शहर तक ?

तुम्हारे इंतज़ार में
कितने खूबसूरत मौसम बीत गए.

(2)

हज़ार निगाहें

मैं जब घर से निकली थी
कई निगाहें
देर तक पीछा करती रहीं

मेरे सैंडिल के तलवों में
चिपकी रहीं
वो देर तक

किसी ने प्रशंसा से देखा
किसी ने व्यंग्य से
किसी ने अश्लीलता से
तो किसी ने प्रेम से

मुझे इन निगाहों की
भाषा बिना उनकी
ओर देखे ही
समझ आ गई

मैं कृतज्ञ हूं
प्रेम की !

पुस्तक चर्चा

अपने समय से मुठभेड़ करती कहानियाँ

सूर्यकांत नागर

वक्त से जिरह नाम के अनुरूप अपने समय से बहस करती कहानियाँ हैं. वक्त से मुठभेड़ करतीं. संकलन में शामिल चौदह कहानियाँ विभिन्न तीन पीढ़ियों के कथाकारों की अवधारणाओं को प्रस्तुत करती हैं. अधिकांश कहानीकारों और संपादक द्वय जीवन सिंह ठाकुर और प्रकाश कांत की चिंता के केंद्र में लोक है. कहानियों से लुप्त होता लोक. कई कहानियों में लोक बहुत गहरे समाया हुआ है. जंगल, डूब, खोए हुए लोग, गल्या का सपना, सुकून, किलाकोट आदि इसी भाव-बोध की रचनाएँ हैं. मालवी-निमाड़ी बोली के प्रयुक्त शब्दों और मुहावरों से कहानियाँ विश्वसनीय और प्रामाणिक बन गई हैं. बोलियों में ऐसे शब्द हैं जिनकी जोड़ के शब्द अन्य भाषाओं में मिलना मुश्किल है. दरअसल संग्रह के माध्यम से लोक को लेकर उल्लेखनीय काम हुआ है.

जंगल भालचंद्र जोशी की लंबी कहानी है. इसमें जंगल के विभिन्न रंग झिलमिला रहे हैं. एक जो कथा नायक के मन में खिलने लगा है, दूसरा जो अपर्णा के मन में उग रहा है, तीसरा पहाड़, नदी, वन और जंगली जानवरों से युक्त है और चौथा वह जिसके बीज भानु के अंदर अंकुरित हो चुके हैं. एक्टिविस्ट भानु पिछड़े कुचले जंगलवासियों के उत्थान के प्रति समर्पित है. अपने लक्ष्य के बरअक्स भानु के लिए तमाम दुनियादारियाँ बेमानी है. प्रभावोत्मकता में लेखक की समृद्ध भाषा का बड़ा योगदान है. भाषा जीवन-दृष्टि की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक संवेदनशील बोरोमीटर है. %दरख़्तो के साए में% (कविता वर्मा) उस ग्रहणी की कहानी है जो घर-परिवार के प्रति समर्पित है. एक प्रकार से यह स्त्री विमर्श की उत्तेजक कहानी है. एक दिन जब वह खुद कार ड्राइव कर मित्र रश्मि से मिलने जाने की घोषणा करती है तो घर के सारे सदस्य संभावित खतरों को ध्यान में रखकर उसे निरुत्साहित करते हैं. उसे अपने सामर्थ्य पर विश्वास है पर परिजनों को नहीं. बात केवल अकेले गाड़ी से जाने की नहीं,स्त्री के सपनों के उजाड़ होने की है. दूसरे की पीड़ा का सही एहसास तब होता है जब व्यक्ति स्वयं उस स्थिति से गुजरता है. इसी भाव-बोध की रचना है निसार अहमद की कहानी %घायल की गति%. विकास के नाम पर डूब में आ रहे गाँव के लोगों की मनोदशा का बखान करती प्रभावी रचना है डॉ गरिमा दुबे की डूब. पीढ़ियों से जिस गांव में रहे जब उससे विस्थापित हो नई जगह बसने का सवाल आता है तो पुरानी तमाम यादें बेचैन करती हैं. लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो स्वार्थवश डूब को जीवन-रेखा मानते रहे हैं.लोक से जुड़ी महत्वपूर्ण कहानी है प्रतिभाशाली लेखक मनीष वैद्य की खोए हुए लोग. वर्तमान समय में बदलते गाँव की तस्वीर. बाज़ार लोक में और लोक बाजार में प्रवेश कर रहा है. अविश्वास की खाई गहरी होती जा रही. बाहरी चमक-दमक बढ़ रही है. गामोठ बा अपने गाँव के मूल स्वरूप को तलाश रहे हैं.

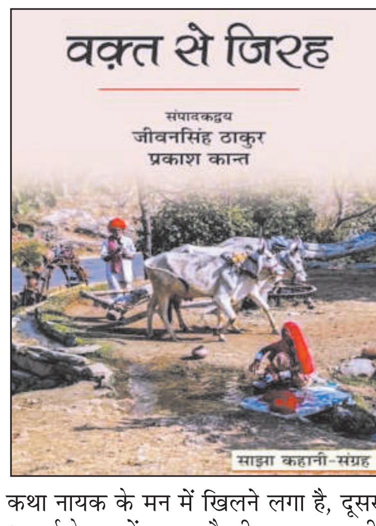

वक्त से जिरह (कहानी संग्रह)
संपादक- जीवन सिंह ठाकुर/प्रकाश कांत
अयन प्रकाशन नई दिल्ली
मूल्य 240 रुपये

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी